Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों के अभिवर्द्धन में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की भूमिका

मनोज कुमार,
शोधकर्त्ता,
एम.ए., एम.एड्., नेट, शोध–छात्र (शिक्षाशास्त्र)
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश
डॉ0 रेखा शुक्ला
शोध निर्देशिका,
विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय)
हण्डिया पी0जी0 कालेज, हण्डिया, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

सारांश – माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को निम्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा उन्हें लोकतांत्रिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान की जा सकती है– प्रार्थना सभा में शिक्षकों द्वारा राष्ट्रीय गान के अलावा अन्य प्रार्थनाओं द्वारा विद्यार्थियों के मूल्यों में वृद्धि के साथ–साथ उनके भाईचारा, आदर, निष्ठा एवं सत्य को जागरूक किया जा सकता है। खेलकूद के माध्यम से अनुशासन, नेतृत्व कौशल, एन0सी0सी0 एवं एन0एस0एस0 के माध्यम से भावात्मक एवं नैतिक दायित्व बोध, सामाजिक एकता, आदर भाव, सामाजिक मूल्य के साथ–साथ राष्ट्रीय मूल्य का विकास होता है। मुक्त पुस्तकालय के द्वारा नैतिक एवं तार्किक क्षमता, कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट के द्वारा सोशल मीडिया एवं फेसबुक पर भेजे जाने वाले लोकतांत्रिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय मूल्यों का विकास, स्काउटिंग एवं गाइडिंग के द्वारा निडरता, धैर्य एवं साहस, भ्रमण आयोजन के माध्यम से राष्ट्रीय धरोहर के बारें में जानकारी, प्रदर्शनी के माध्यम से स्वयं प्रदर्शन एवं अभिव्यक्ति, पेन्टिंग प्रतियोगिता के द्वारा देश के राष्ट्रीय चित्रों की पहचान तथा नृत्य, संगीत एवं ड्रामा के माध्यम से राष्ट्रीय, एवं क्षेत्रीय मूल्यों में वृद्धि, सेमिनार/वर्कशाप के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों की जानकारी, जनसंचार के विभिन्न माध्यम जिसमें यू–ट्यूब, फेसबुक, वॉटशप आदि जैसे संचार माध्यमों के राष्ट्रीय एवं लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास, छात्रसंघ के माध्यम से लोगों में लोकतांत्रिक मूल्य के साथ–साथ राजनैतिक मूल्य एवं सामाजिक मूल्यों का भी विकास, राष्ट्रीय पर्व के द्वारा देशभक्ति, कर्त्तव्यनिष्ठा, त्याग, बलिदान एवं अच्छे नागरिक मूल्यों का विकास, महापुरुषों के जन्मदिन का आयोजन द्वारा महापुरुष के बारें में जानकारी एवं स्वयं में उसे उतारने का प्रयास, विविध मेले द्वार धार्मिक, सामाजिक मूल्यों के साथ लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है। निष्कर्षतः पाठ्य सहगामी क्रियाएँ एक ऐसा माध्यम है

SHISRRJ192667 | Received : 15 Nov 2019 | Accepted : 30 Nov 2019 | November-December-2019 [2 (6) : 138-143]

जिसके द्वारा विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों में वृद्धि किया जा सकता है तथा एक सभ्य एवं सुसंस्कृति राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

की–वर्ड – माध्यमिक स्तर, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, लोकतांत्रिक मूल्य

ऐसी क्रियाएँ जो विद्यार्थियों के कक्षा अध्ययन से संबधित न हो, लेकिन जिसमें भाग लेकर विद्यार्थियों अपना सामाजिक, नैतिक, शारीरिक और संवेगात्मक विकास कर सकता है, तथा वे भी पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग कहें जा सकते हैं को पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

मुनरो ने अपने विश्वकोश में विद्यालयीय क्रियाओं का अर्थ स्पष्ट करते हुए, बताया है कि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का आशय विद्यालयों में पुस्तकीय अध्ययन के अतिरिक्त संस्थानों द्वारा प्रतिस्थापित उन ऐच्छिक क्रियाओं के समायोजन से है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए नितांत आवश्यक है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएं बालक के मानसिक एवं शारीरिक विकास को संतुलन प्रदान करती है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में बालक अपनी रूचि एवं योग्यता के अनुसार प्रतिभाग करता है जिसके कारण बालक में आत्म विश्वास निर्णय लेने की क्षमता एवं नेतृत्व गुण जैसे व्यक्तित्व गुणों का विकास होता है। बालक पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से स्वयं को शिक्षण के साथ ही चारित्रिक गुणों में निपुणता प्राप्त करता है। कोठारी आयोग (1964–66) के अनुसार शिक्षण के साथ ही छात्रों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से नेतृत्व कौशल एवं व्यक्तित्व के गुणों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

स्वतंत्रता पश्चात् देश में मूल्यों की वृद्धि के लिए शिक्षा को माध्यम बनाया गया तथा समय–समय पर शिक्षा के लिए बने शिक्षा आयोग द्वारा इन मूल्यों में वृद्धि के लिए नियम बनाये गये। कोठारी आयोग (1964–66) के अनुसार शिक्षण के साथ ही छात्रों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से नेतृत्व कौशल एवं व्यक्तित्व के गुणों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को निम्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा उन्हें लोकतांत्रिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान की जा सकती है–

- **प्रार्थना सभा**

प्रार्थना सभा के माध्यम से विभिन्न जातियों, ऊँच–नीच एवं सामाजिक– आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों में आपसी समभाव की भावना, अनुशासन, ध्यान की एकाग्रता, लयबद्ध गायन, उत्तम विचार आदि मूल्यों का विकास होता है। प्रार्थना सभा में राष्ट्रीय गान से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय मूल्य का विकास होता है। अतः शिक्षकों द्वारा राष्ट्रीय गान के अलावा अन्य प्रार्थनाओं द्वारा विद्यार्थियों के मूल्यों में वृद्धि के साथ–साथ उनके भाईचारा, आदर, निष्ठा एवं सत्य को जागरूक किया जा सकता है।

- **खेलकूद**

बच्चों के शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक विकास साथ ही खेलकूद से विद्यार्थियों में नेतृत्व कौशल एवं समूह के मध्य सामंजस्य स्थापित करने में खेलकूद का बहुत अधिक महत्व होता है। खेलकूद के माध्यम से लोगों में अनुशासन के साथ–साथ भाईचारे जैसे मूल्यों का विकास होता है साथ ही कुछ विद्यार्थी खेलकूद को अपने व्यवसाय में जोड़ लेते हैं। खेलकूद से विद्यार्थियों में अनुशासन जैसे मूल्यों का विकास होता है।

- **एन0सी0सी0 एवं एन0एस0एस0**

विद्यालय में एन0सी0सी0 एवं एन0एस0एस0 से छात्रों में सामुदायिक दायित्व के प्रति जिम्मेदारियों के साथ छात्रों में भावात्मक एवं नैतिक दायित्व बोध को भी विकसित किया जा सकता है साथ ही इसका महत्त्व सामाजिक एकता, कठिन कार्यों को सरल बनाने तथा छात्रों में आदर भाव विकसित करना इस योजना का उद्देश्य होता है। एन0सी0सी0 एवं एन0एस0एस0 के द्वारा विद्यार्थियों में आत्मरक्षा की भावना के साथ विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष के लिए तैयार करता है। एन0सी0सी0 के द्वारा विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्य के साथ–साथ राष्ट्रीय मूल्य का विकास होता है।

- **मुक्त पुस्तकालय**

विद्यार्थियों के मूल्यों में वृद्धि हेतु पुस्तकालय का विशेष महत्त्व होता है। पुस्तकालय में विद्यार्थियों द्वारा नवीन पुस्तकों के साथ–साथ भिन्न–भिन्न सामाजिक एवं नैतिक लेखों का स्वाध्ययन तथा लेखकों, समाजशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों के मतों का तार्किक विश्लेषण एवं परख करने की योग्यता विकसित होता है। साथ ही विद्यार्थी अपने तार्किक क्षमता के आधार पर नये विचारों का प्रस्तुत कर सकता है तथा नवीन प्रश्नों का समाधान भी कर सकता है। अतः पुस्तकालय के द्वारा विद्यार्थियों में मूल्यों में वृद्धि स्वयं के द्वारा होती है।

- **कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट**

वर्तमान में जहाँ विद्यार्थी संचार से जुड़ता जा रहा है वहीं कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट उससे अछूता नहीं है। आज लगभग सभी छात्र अपना अधिक समय कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट तथा मोबाइल पर खर्च कर रहा है जिससे वे एकान्तवादी होते जा रहे हैं। अतः विद्यार्थियों को कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट पर शिक्षा सम्बन्धी बातों की जानकारी के साथ–साथ उस पर अच्छे लेखों की जानकारी देनी चाहिए जिससे उनके मूल्यों में वृद्धि हो। आज सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम हो गया है जिससे लोग एक–दूसरे तक अपनी बातों को पहुँचा रहे हैं और सोशल मीडिया के द्वारा विद्यार्थियों के मूल्यों में वृद्धि करना आसान हो गया है। अतः विद्यार्थियों को कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट की जानकारी आज के समय में आवश्यक हो गयी है।

- **स्काउटिंग एवं गाइडिंग**

इसके माध्यम लोगों में सांस्कृतिक विविधता जैसे मूल्यों का विकास किया जाता है। इसके द्वारा

विद्यार्थियों में जंगल, पर्वत एवं बाढ़ आदि के प्रति संघर्ष करना एवं समायोजन की योग्यता में वृद्धि होती है। स्काउटिंग एवं गाइडिंग के द्वारा विद्यषर्थियों में निडरता, धैर्य एवं साहस जैसे मूल्यों का विकास होता है।

- **भ्रमण आयोजन**

जैसा कि प्राचीन काल में लोग गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करते थे तथा भ्रमण के द्वारा जानकारी प्राप्त करते थे। आज लोग पाठ्यक्रम से अधिक जुड़ गये है जिससे वे राष्ट्र के धरोहर के बारें में जानकारी नहीं प्राप्त कर पाते हैं। ऐसे में विद्यार्थियों को भ्रमण पर लेकर जाकर साक्ष्य रूप में उन जगहों को दिखाना चाहिए जिससे उनके सैद्धान्तिक विचारों को मूर्त रूप प्रदान हो सके और विद्यार्थियों में सैद्धान्तिक एवं प्रत्यक्ष के मध्य अन्तर समझने में आसानी हो सके।

- **प्रदर्शनी**

प्रदर्शनी एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा छात्रों में अभिव्यक्ति के साथ–साथ चारित्रिक मूल्यों में विकास होता है। प्रदर्शनी के द्वारा छात्र स्वयं प्रदर्शन एवं अभिव्यक्ति के माध्यम से उनमें आत्मविश्वास तो बढ़ता ही है साथ ही उनमें संकोच जैसे मनोवैज्ञानिक कारक दूर होते हैं। विद्यालय प्रदर्शनी के द्वारा विद्यार्थियों को अलग–अलग चीजों के बारें में जानकारी होती है। प्रदर्शनी में लोकतांत्रिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों से सम्बन्धित जानकारियाँ विद्यार्थियों को प्राप्त होती है।

- **पेन्टिंग प्रतियोगिता**

विद्यालय में पेन्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन समय–समय पर किया जाना चाहिए जिसमें उन महानभावों की पेन्टिंग तथा मूल्यों से सम्बन्धित लेखों की पेन्टिंग की प्रतियोगिता करानी चाहिए जिससे विद्यार्थियों के भावात्मक विचार उनके व्यवहारात्मक प्रदर्शन में दिख सके। पेन्टिंग के द्वारा ही विद्यार्थियों में सृजनात्मकता एवं नवाचारी जैसे विचारों में वृद्धि करना सम्भव है। वर्तमान में विद्यार्थी पेन्टिंग को व्यवसाय के रूप में भी अपना रहे है।

- **नृत्य/संगीत/ड्रामा**

वर्तमान में नृत्य, संगीत एवं ड्रामा लोगों का शौकीन बनता जा रहा है एवं लोग इनके तरफ बहुत तेजी से अग्रसर हो रहे हैं। जहाँ देखों आज प्रतियोगिता के माध्यम से नृत्य, संगीत एवं ड्रामा में लोग भाग ले रहे हैं। टेलीविजन में आने वाले नृत्य, संगीत एवं ड्रामा का प्रसारण बहुत अधिक हो रहा है एवं बच्चे इस तरफ अधिक रुचि ले रहे हैं। अतः विद्यार्थियों को नृत्य, संगीत एवं ड्रामा के बारें में जानकारी प्रदान करने के साथ–साथ उन्हें अभ्यास भी कराना चाहिए तथा समय–समय पर विद्यालय में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं मूल्य से सम्बन्धित नृत्य, संगीत एवं ड्रामा का आयोजन करना चाहिए जिससे उनके मूल्यों में वृद्धि हो सके।

- **सेमिनार/वर्कशाप**

सेमिनार एवं वर्कशाप के माध्यम से विषय–विशेषज्ञों द्वारा किसी निश्चित विषय पर क्रियात्मक गतिविधियों

के माध्यम से उनके ज्ञान में संवर्धन किया जाता है। आज जहाँ देखों विषय से सम्बन्धित सेमिनार एवं वर्कशाप का आयोजन राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जा रहा है लेकिन इन सेमिनार एवं वर्कशाप का केवल विषय से सम्बन्धित होने के कारण लोगों के मूल्यों की जानकारी नहीं प्राप्त हो पाती है। लोग केवल पाठ्यक्रम के माध्यम से जो मूल्य जानते हैं वहीं तक सीमित रहते हैं। अतः सेमिनार एवं वर्कशाप के द्वारा मूल्यों की जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।

- **जनसंचार के विभिन्न माध्यम**

जनसंचार एक ऐसा माध्यम है जिससे लोगों को लोगों से जोड़ना सिखाया है। वर्तमान में जनसंचार ने अपना जाल बिझा लिया है जिधर देखों वही जनसंचार माध्यम से लोगों का कार्य हो रहा है। इनके बिना लोग अपंग होते जा रहे हैं। यू–टूब, फेसबुक, वॉटशप आदि जैसे संचार माध्यमों के द्वारा लोग एक–दूसरे जुड़ रहे है और अपने बातों को इनके माध्यम से लोगों को पहुँचा रहे हैं। अतः मूल्यों से सम्बन्धित बातों के पहुँचाने का एक बहुत बड़ा साधन हो गया है। अतः इन जनसंचार माध्यम की जानकारी शिक्षा के द्वारा दी जानी चाहिए जिससे लोग इनका गलत इस्तेमाल न कर अच्छे कार्यों में लगाये।

- **छात्रसंघ**

हमारे देश में महान शिक्षाशास्त्रियों एवं राजनीतिज्ञों के साथ–साथ महान लोग भी विश्वविद्यालय से ही निकलते हैं। छात्रसंघ के माध्यम से लोगों में लोकतांत्रिक मूल्य के साथ–साथ राजनैतिक मूल्य एवं सामाजिक मूल्यों का भी विकास होता है।

- **राष्ट्रीय पर्व**

विद्यालय एवं विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय पर्व के द्वारा देशभक्ति, कर्त्तव्यनिष्ठा, त्याग, बलिदान एवं अच्छे नागरिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है। अतः राष्ट्रीय पर्व पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को इसका उद्देश्य एवं महत्त्व मालूम हो सके तथा मूल्यों का भी विकास हो सके।

- **महापुरुषों के जन्मदिन का आयोजन**

महापुरुषों के जन्मदिन का आयोजन विद्यालय एवं विश्वविद्यालय में किया जाना चाहिए जिसमें उन महापुरुषों की गाथाएं एवं उनके कृतित्व का बताना चाहिए एवं उनके बताये गये मूल्यों की भी व्याख्या प्रस्तुत करनी चाहिए जिससे उनके जीवन में किये गये कार्यों पर बने महापुरुष के बारें में जान सकें और अपने जीवन में उसे उतारने का प्रास कर सके।

- **विविध मेले**

विद्यालय एवं विश्वविद्यालय में पुस्तक, शिल्प, धार्मिक एवं सामाजिक मेलों का आयोजन करना चाहिए जिससे लोगों को मूल्य सम्बन्धित पुस्तकें मिल सकें साथ ही इस मेले से उनमें धार्मिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास हो सके।

निष्कर्ष—

अतः माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों में वृद्धि हेतु पाठ्य सहग्रामी क्रियाओं का महत्त्व इसलिए अधिक होता है कि वे आगामी देश के भविष्य होते हैं। आज शिक्षा के साथ—साथ छात्रों में मानवीय, सामाजिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, व्यवहारिक, व्यक्तित्व, चारित्रिक एवं राजनैतिक मूल्यों की आवश्यकता अधिक होती जा रही है क्योंकि लोग आधुनिक एवं भौतिकता की दौड़ में मूल्यों को नजरान्दाज करते जा रहे है जिससे शिक्षा केवल एक व्यवसाय के रूप में हो गया है तथा सभ्य एवं सुसंस्कृति समाज को पीछे छोड़ता जा रहा है।

अतः कहा जा सकता है कि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों में वृद्धि किया जा सकता है तथा एक सभ्य एवं सुसंस्कृति राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- शाहिद, मोहम्मद एवं सिंह, अमरप्रीत (2015). "प्रतियोगिता के विभिन्न स्तरों पर फुटबॉल खिलाड़ियों में उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन" इन्टरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च एनालिसिस, आई.एस.एस.एन. 2277—8160, इम्पैक्ट फैक्टरः 4.547, वॉल्यूम 4, इश्यु 6, पेज नम्बर 294—296।
- कौल, संगीता (2016). उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं की छात्र—छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सहभागिता का प्रभाव, इमर्जिंग रिसर्च जर्नल, वॉ0 1, इश्शू—2, पृ0 30—33
- सिंह, प्रमिला (2017). रीवा विकासखण्ड के हाई स्कूल स्तर पर पाठ्य—सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलनरी रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट, वॉ0 4, इश्शू 2, पृ0 278—281
- जादौन एवं पारीक (2017). जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियोंकी पाठ्य सहगामी क्रियाओं व व्यक्तित्व विकास में सह सम्बन्ध का अध्ययन, बियानी गर्ल्स बी0एड0 कालेज, जयपुर (राजस्थान)
- पाण्डेय एवं सिन्हा (2017). शिक्षा में पाठ्य सहगामी क्रियाएं एवं विभिन्न मूल्य निर्माण में इन क्रियाओं की उपादेयता, नेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलनरी रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट, वॉ0 2, इश्शू—2, पृ0 128—129
- कुमार, राजेश (2018). माध्यमिक स्तर पर सामान्य एवं दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन, इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल, चेतना, वॉ0 1, इयर—3, पृ0 210—217
- राय, शैलजा (2018). शिक्षा में पाठ्य सहगामी क्रियाएं एवं विभिन्न मूल्य निर्माणः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एण्डवांस एजुकेशन रिसर्च, वॉ0 3, इश्शू—2, पृ0 269—270